Peer Reviewed Journal for M.Phil. , Ph.D. & Appointment of Teacher in Universities & College

ISSN : 2454-4655 VOLUME - 10 No. : 3, April - 2024

International Journal of Social Science & Management Studies

Peer Reviewed & Refereed Journal

Indexing & Impact Factor 5.2

राष्ट्रीय संगोष्ठी

"लैंगिक संवेदनशीलता एवं समानता"

(Gender Sensitivity & Equality)

दिनांक : 27 अप्रैल, 2024, शनिवार

श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय, जामडोली, जयपुर

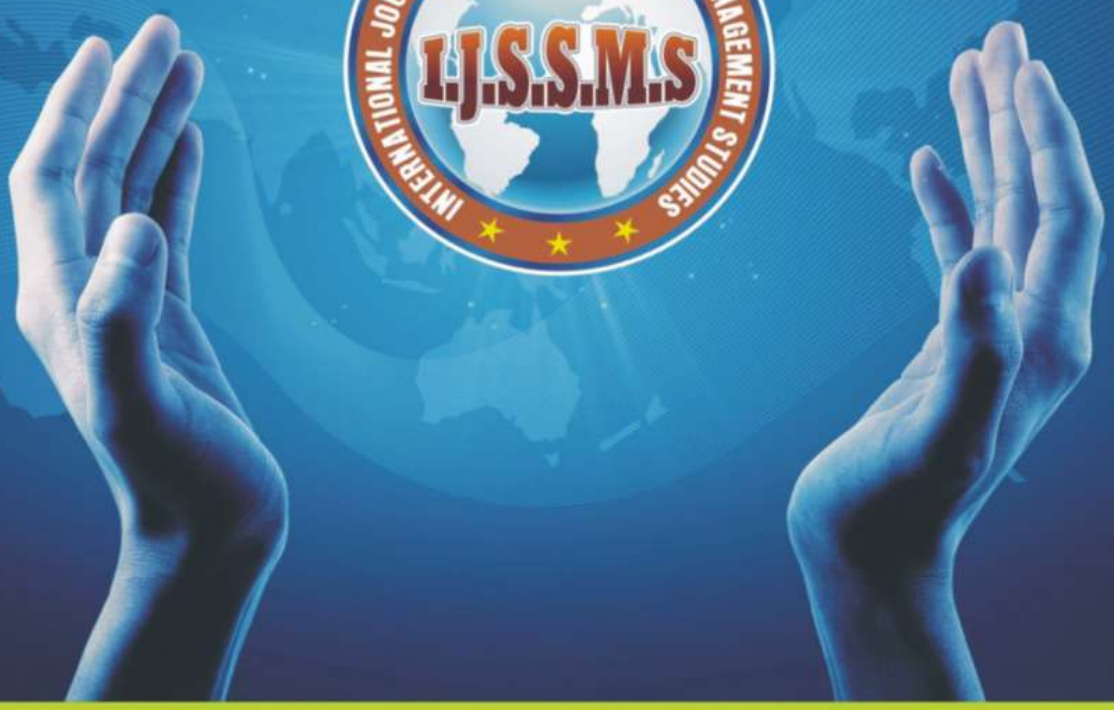

International Journal of Social Science & Management Studies

CONTENTS

S. No.	Paper Title	Author Name	Page No.
1	Creating Gender Friendly Classrooms	Dr. Dinesh Kumar Gupta	1-6
2	Gender Discrimination in India	Dr. Anupama Verma	7-9
3	Gender Equality and the Aspects of Curriculum	Dr. Alpa Nagar	10-13
4	Gender Equality and Policy Determination in Indian Perspective	Dr. Ashok Kumar Bairwa	14-18
5	Gender Sensitivity and Equality in Indian Perspective	Dr. Nekram Jigarkumar G. Acharya	19-22
6	A Review Paper on Gender Differences in Emotional Intelligence	Prof. Mudit Rathore Ms. Mahak Chhabra	23-26
7	Gender Sensitivity & Equality	Neeta Arya	27-31
8	Gender Inequality: Reason and Solution	Dr. Lokendra Singh Roshankumar R.Patel	32-34
9	Sexual Sensitivity in Adolescence	Dr. Suman Choudhary	35-38
10	Gender Sensitivity & Equality in Indian Perspective	Dr. Alpa Nagar Suresh Kumar Yadav	39-43
11	Gender Sensitivity and Equality	Dr. Ashok Bhargava Vikram Singh	44-48
12	Role of Family, School and Society in Gender Equality	Dr. Lokendra Singh Vinodkumar H.Pandya	49-51
13	The Causes and Solutions of Gender Inequality	Pro. Rita Sharma Ashok Kumar	52-55
14	किशोरावस्था में लैंगिक संवेदनशीलता	बनवारी लाल बैरवा	56-58
15	भारतीय परिवेश में लैंगिक संवेदनशीलता	डॉ. मुकेश कुमार मीणा	59-62
16	लैंगिक असमानता : कारण एवं समाधान	डॉ. ज्योति भारद्वाज	63-64
17	सतत् विकास के लक्ष्य के रूप में लैंगिक समानताओं की चुनौतियाँ	डॉ. रणजीत खींची	65-67
18	लैंगिक समाज में परिवार, विद्यालय एवं समाज की भूमिका	श्रीमती कविता भारद्वाज	68-69
19	लैंगिक असमानता कारण व समाधान	डॉ. संध्या शर्मा मोनालिसा शर्मा	70-71

20	लैंगिक समानता एवं समान नागरिक संहिता	डॉ. प्रियंका गुप्ता श्रीमती सुमन शर्मा	**72-74**
21	लैंगिक संवेदनशीलता और समानता	प्रो. बी.एल.जैन	**75-77**
22	लैंगिक संवेदनशीलता तथा समानता में शिक्षा की भूमिका	डॉ. श्रद्धा सिंह चौहान रजनी जादौन	**78-79**
23	लैंगिक असमानता : कारण और समाधान	राजेंद्र शर्मा	**80-82**
24	लैंगिक संवेदनशीलता एवं समानता	राजकुमारी सैन	**83-85**
25	लैंगिक असमानता : कारण एवं समाधान	डॉ. नवजोत भनोत सीमा कुमारी	**86-90**
26	लैंगिक संवेदीकरणः शिक्षक शिक्षा की भूमिका	डॉ. शालू सोनी	**91-95**
27	लैंगिक समानता और समान नागरिक संहिता	सीताराम चौधरी	**96-98**
28	दिव्यांग बालक–बालिकाओं की शिक्षा	डॉ. पंकज पारीक तारा चन्द्र रैगर	**99-103**
29	लैंगिक समानता में परिवार, विद्यालय और समाज की भूमिका	सुश्री शुभांगी नामा श्रीमती आशा शर्मा	**104-106**
30	लैंगिक असमानता : कारण एवं समाधान	डॉ. संगीता यादव	**107-108**
31	लैंगिक संवेदनशीलता एवं समानता	वेद प्रकाश नागर	**109-112**

International Journal of Social Science & Management Studies (I.J.S.S.M.S.)
Peer Reviewed–Refereed Research Journal, Indexing & Impact Factor - 5.2, Ex - UGC S.N. 5351
ISSN : 2454 - 4655, Vol. - 10, No. – 3, April – 2024, Conference Special Issue 2nd
2024

लैंगिक संवेदनशीलता और समानता

प्रो. बी.एल. जैन
विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं (राजस्थान)

सारांश :– लैंगिक संवेदनशीलता और समानता सामाजिक और नैतिक मूल्यों का भाग है। यह सभी को समान रहने का भाव पैदा करती है। समाज के विकास, प्रगति और उन्नति में इसका अनुपम योगदान है। भेदभाव से किसी भी समाज का, प्रांत का, राष्ट्र का, धर्म का विकास नहीं हुआ है। लैंगिक संवेदनशीलता के प्रति गहनता से सोचना होगा तब जाकर समाज में समानता का भाव अभिव्यक्त किया जा सकता है। लैंगिक संवेदनशीलता और समानता से ही समाज में समानता, मूल्यों का संवर्धन, न्याय की उपस्थापना, सामाजिक और व्यक्तिगत उत्थान, समर्थ समाज का निर्माण किया जा सकता है। लैंगिक समानता और संवेदनशीलता का प्रयोग समाज में समानता, न्याय और समृद्धि को बढ़ाने के लिए किया जाता है। इसका मतलब यह है कि हर व्यक्ति को उनकी क्षमताओं, प्रतिबद्धताओं, और अधिकारों का समान दर्जा मिलना चाहिए, बिना किसी भेदभाव के।

शब्दावली :– संवेदनशीलता, समानता, मूल्य, समरसता, समर्थ, समान अवसर, न्याय, व्यक्तित्व विकास।

प्रस्तावना :– लैंगिक संवेदनशीलता और समानता दो अहम मुद्दे हैं, जो समाज में उचित और समर्थन के प्रति संवेदनशीलता बढ़ाते हैं। लैंगिक समानता सामाजिक और नैतिक मूल्यों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो सभी व्यक्तियों को समान अधिकार और अवसर प्रदान करता है। लैंगिक समानता समाज के विकास और प्रगति में एक महत्वपूर्ण योगदान देती है, जो विभिन्न समुदायों और व्यक्तियों को एक समान और समान अवसरों का सामर्थ्य प्रदान करती है। **"लैंगिकता"** शब्द का अर्थ है व्यक्ति की लैंगिक पहचान या संलिप्ति। यह एक व्यक्ति के लिंग जैसे कि पुरुष, महिला या अन्य लैंगिक भेद के साथ जुड़ा है। **"लैंगिकता"** शब्द लैंगिक समानता और समलैंगिकता के बारे में भी उपयोग किया जाता है। और लैंगिक समानता का मतलब होता है, व्यक्तियों को समान अधिकारों और अवसरों की पहुंच प्रदान करना, जबकि समलैंगिकता का मतलब होता है व्यक्तियों के लिंग के आधार पर भेदभाव को समाप्त करना। **"संवेदनशीलता"** का मतलब है किसी अन्य व्यक्ति के भावनाओं, अनुभवों और परिस्थितियों के साथ संवाद करने की क्षमता। एक संवेदनशील व्यक्ति दूसरों की भावनाओं को समझने में सक्षम होता है और उसकी आवश्यकताओं को समझने की कोशिश करता है। यह उसकी सामाजिक और व्यक्तिगत संबंधों को मजबूत करता है और संवाद को सुगम और संवेदनशील बनाता है। **"समानता"** शब्द का अर्थ है सभी को समान और न्यायसंगत दृष्टिकोण से देखना और व्यवहार करना। यह विभिन्न समूहों, समुदायों, जातियों, लैंगिकताओं और समाज के सभी व्यक्तियों के लिए उपयोगी होती है। समानता का अर्थ है सभी के साथ बराबरी का व्यवहार करना, न्यायपूर्णता का आदर करना और किसी भी प्रकार के भेदभाव के खिलाफ लड़ना। समानता का सिद्धांत मानवीयता, सामाजिक न्याय और समाज के विकास के लिए महत्वपूर्ण है। यह समाज में एकता, सहयोग और समरसता को बढ़ावा देता है और हर व्यक्ति को उसके सामाजिक और नैतिक मूल्यों के साथ समान सम्मान प्राप्त करने का अवसर देती है। लैंगिक समानता के प्रति संवेदनशीलता और गहरी समझ समाज में उचित अभिवृद्धि के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह न केवल समाज के साथ सामाजिक न्याय और समानता को बढ़ाता है बल्कि समृद्धि, सामाजिक विकास और व्यक्तिगत उत्थान के लिए भी महत्वपूर्ण है। एक समर्थ और समान समाज का निर्माण केवल विभिन्न लैंगिक और समुदायों के साथ समानता और समर्थन के माध्यम से ही संभव है। लैंगिक संवेदनशीलता और समानता के विषय में अग्रांकित महत्वपूर्ण बिंदु–

1. **लैंगिक समानता सामाजिक और नैतिक मूल्यों का महत्वपूर्ण हिस्सा है** – यह समाज में न्याय, समानता और समरसता के मूल्यों को बढ़ावा देता है। लैंगिक समानता सामाजिक मूल्यों के साथ ही व्यक्तिगत और पारिवारिक मूल्यों को भी समाहित करती है।
2. **लैंगिक समानता से समाज में समरसता का संवर्धन** – समाज में लैंगिक समानता के माध्यम से हर व्यक्ति को अपनी क्षमताओं के आधार पर मौके और समान अवसर मिलते हैं। इससे समाज में समरसता बढ़ती है और समृद्धि के लिए एक महत्वपूर्ण योगदान बनता है।
3. **लैंगिक समानता से सामाजिक मूल्यों में समरसता और समानता को बढ़ावा** – लैंगिक समानता से सामाजिक मूल्यों में समरसता और

समानता को बढ़ावा मिलता है, क्योंकि यह व्यक्तियों को समान अधिकार और अवसर प्रदान करता है। जब लोग लैंगिक समानता के प्रति संवेदनशील होते हैं, तो वे विभिन्न लैंगिक समुदायों के सदस्यों के साथ सहयोग, समरसता और समानता को समर्थन करते हैं। अतः लैंगिक समानता को समर्थन और प्रोत्साहन देना आवश्यक है। लैंगिक समानता से समाज में अधिक उचित माहौल बनता है, जिससे लोग खुले मन से अपने विचार और भावनाओं को व्यक्त कर सकते हैं। इससे व्यक्तियों के बीच संबंधों में समरसता बढ़ती है और विविधता को समृद्धि का माध्यम माना जाता है।

4. **समर्थ समाज का निर्माण** – लैंगिक समानता नैतिक दृष्टिकोण से भी मानविक मूल्यों के साथ आत्म–सम्मान, सम्मान और समरसता को बढ़ाती है। लैंगिक समानता के प्रति समर्थन और संवेदनशीलता नैतिक आदर्शों का पालन करने में मदद करती है और एक न्यायाधीश और समर्थ समाज का निर्माण करता है।
5. **लैंगिक समानता से समाज में समान अवसरों की स्थापना** – लैंगिक समानता से समाज में समान अवसरों की स्थापना होती है, जो विभिन्न लोगों को समान रूप से उत्तेजित करती है। इसके परिणामस्वरूप समाज में उचिता, न्याय और सामाजिक समरसता का माहौल बनता है जो हर किसी के लिए अधिक संवेदनशील और सहयोगी होता है। इससे समाज की स्थिरता और समृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान होता है।
6. **लैंगिक समानता से न्याय का माहौल** – लैंगिक समानता से न्याय का माहौल बढ़ता है, क्योंकि यह सभी व्यक्तियों को समान रूप से विचार और कार्य करने का मौका देती है। जब समाज में लैंगिक समानता की स्थापना होती है, तो वहाँ हर व्यक्ति को उसकी योग्यता और प्रतिभा के आधार पर मौका मिलता है बिना किसी भेदभाव या भ्रांति के। यह न्याय का माहौल सृजित करता है, जिससे लोग स्वतंत्रता, उत्साह और सहयोग में रहकर अपनी क्षमताओं को विकसित कर सकते हैं। समाज में लैंगिक समानता के माध्यम से लोगों को न्याय की भावना प्राप्त होती है और उन्हें समान अवसरों की पहुंच मिलती है, जो उनके व्यक्तित्व के विकास में महत्वपूर्ण होती हैं। इस तरह, लैंगिक समानता से समाज में एक न्यायपूर्ण माहौल बनता है जो विविधता, समरसता और समानता को प्रोत्साहित करता है। यह समाज को समृद्धि और सम्मान के साथ एकजुट करता है और न्याय के मानकों को प्रोत्साहित करता है।
7. **लैंगिक समानता व्यक्तित्व के विकास में महत्वपूर्ण** – लैंगिक समानता व्यक्तित्व के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जब लोगों को समाज में लैंगिक समानता का मौका मिलता है, तो वे अपनी व्यक्तित्व विकास की नींव रख सकते हैं। यह समानता न केवल उनके लिए समान अवसर प्रदान करती है, बल्कि उन्हें अपने स्वार्थों, इच्छाओं, और क्षमताओं को स्वतंत्र रूप से व्यक्त करने की सामर्थ्य प्रदान करती है। लैंगिक समानता से लोगों को समाज में समान रूप से महत्वपूर्ण भूमिकाओं में प्रतिष्ठित किया जाता है, जैसे कि शिक्षा, निर्धारित कार्य और नेतृत्व। इसके परिणामस्वरूप लोग स्वतंत्रता के साथ अपने रूचिकर और स्वाभाविक रूप से अपनी पहचान विकसित कर सकते हैं। व्यक्तित्व के विकास में लैंगिक समानता का महत्वपूर्ण योगदान है क्योंकि यह व्यक्ति को उसकी अद्वितीयता को स्वीकार करने और समाज में अपनी स्थिति को स्थापित करने में मदद करता है। इससे समाज में विविधता और समृद्धि की भावना विकसित होती है, जिससे समाज का समृद्धि से उत्थान होता है।

निष्कर्ष :– लैंगिक समानता सामाजिक और नैतिक मूल्यों का महत्वपूर्ण हिस्सा है। मूल्यों का संवर्धन लिंग समानता से बढाया जा सकता है। लैंगिक समानता से समाज में समरसता के भाव विकसित होते है। सामाजिक मूल्यों में समरसता और समानता को बढ़ावा, समर्थ समाज का निर्माण, समाज में समान अवसरों की स्थापना, व्यक्तित्व के विकास में महत्वपूर्ण योगदान, लैंगिक समानता से न्याय का माहौल बढ़ता है। इससे समाज में विविधता और समृद्धि की भावना विकसित होती है। जिससे समाज समृद्धि से उत्थान को अग्रसरित होता है। लैंगिक समानता और संवेदनशीलता के माध्यम से समाज में सामाजिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक रूप से समानता को प्रोत्साहित किया जा सकता है, जिससे एक उन्नत, संवेदनशील, और समृद्ध समाज का निर्माण हो सकता है। लैंगिक संवेदनशीलता और समानता दो अहम मुद्दे हैं जो समाज में समानिता और न्याय की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये विषय लैंगिक समानता और पारितंत्रिक व्यक्तित्व के आधार पर हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. जॉर्ज फर्नांडीज का लेख "नैतिक अधोपतन के पचास वर्ष, जनसत्ता दिल्ली, 13 अगस्त, 1997
2. नेगी, सुरेंद्र सिंह,(2000) नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता, आदित्य पब्लिर्स (मध्य प्रदेश)
3. लोढ़ा, महावीर मल (2007 द्वितीय संशोधित संस्करण) नैतिक शिक्षाः विविध आयाम, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर
4. समणी ऋजु प्रज्ञा, नवीन संस्करण (2011) व्यक्तित्त्व विकास और योग, जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय, लाडनूं–341306
5. कोठारी, गुलाब (2016) मानसः संस्कृति और सभ्यता, पत्रिका प्रकाशन, जयपुर।